होली और गौरैया – कोई जोड़ नहीं बनता न इन दो में! भला, गौरैया को होली से क्या लेना-देना। होली में पलाश अपनी चमक बखूबी बिखेरता है। गाँवों में तो पलाश के फूलों से आज भी रंग बनाया जाता है। और इसी रंग से होली खेली जाती है। इस पलाश से गौरैया का रिश्ता हो सकता है?

लाल रंग के टीके वाली गौरैया

हाँ, वो गौरैया ही थी!

पी एम लाड

मैं यह किस्सा सुनाऊँ इससे पहले दो बातें बताना चाहता हूँ। एक, मैं जिस गौरैया की बात कर रहा हूँ उसे येलो थ्रोटेड स्पैरो या चेस्टनट शोल्डर्ड पेट्रोनिया कहते हैं। क्योंकि इसके गले पर एक पीला टिक्का दिखता है साथ ही उसके पंखों पर लाल-सा धब्बा भी होता है।

येलो थ्रोटेड स्पैरो ने ही सालिम अली की पक्षियों में रुचि जगाई थी।

यह किस्सा उन दिनों का है जब सालिम अली नौ-दस साल के रहे होंगे। एक दिन उन्होंने अपनी एयरगन से एक गौरैया मार गिराई। यह गौरैया कुछ खास किस्म की थी। उसके गले पर एक पीला टीका-सा था। वे इसकी जाँच-पड़ताल में लग गए। उनके मामू ने उन्हें बीएचएनएस मुम्बई के दफ्तर जाने की सलाह दी। वे अपने शिकार को उठाए इस संस्था के दफ्तर पहुँचे। सालिम संस्था के निदेशक ड्ब्ल्यू एस मिलार्ड से मिले। मिलार्ड ने उन्हें इस खास तरह की गौरैया के बारे में विस्तार से बताया। इस मुलाकात ने सालिम अली का जीवन ही जैसे मोड़ दिया था। पक्षियों में उनकी दिलचस्पी जुनून की हद तक बढ़ गई थी। उन्होंने तय कर लिया कि वे पक्षी विज्ञानी ही बनेंगे। और हम जानते हैं वे ताउम्र पक्षियों की दुनिया को जानने में लगे रहे। इस वाकए के ही नाम पर उन्होंने अपनी आत्मकथा भी लिखी – *फॉल ऑफ ए स्पैरो*।

अब मैं अपने किस्से पर आता हूँ। उस दिन मैं होशंगाबाद में था। 26 फरवरी 2010 को। टहलते हुए मैं हमेशा की तरह पक्षियों को निहार रहा था। एक छुटकी-सी चिड़िया ज़मीन पे बैठी (कि खड़ी?) कुछ चुग रही थी। मैंने यूँ ही उसके कुछ फोटो ले लिए। और वह उड़कर एक टहनी पर बैठ गई। यह पीले टीके वाली गौरैया थी। उसने आराम से बैठे-बैठे हमें उसके कई फोटो निकालने के मौके दिए। भोपाल आकर मैंने वे फोटो अपने कम्प्यूटर पर ले लिए।

जब मैंने उन्हें गौर से देखा तो अचरज में पड़ गया। पीले टीके वाली इस गौरैया के सिर पर लाल रंग का एक टीका भी था। (फोटो - देखो) तो क्या मैंने गौरैया प्रजाति की अब तक अजनबी रही कोई चिड़िया देख ली? मेरे मन में उथल-पुथल मच गई थी। मैंने अपने उन दोस्तों को फोन किए जो पक्षियों में दिलचस्पी रखते हैं। किताबें खँगाली। इंटरनेट देखा। पर, कहीं कुछ नहीं मिला। फिर मैंने सालिम अली की किताब देखी। आज से पचास साल पुराने उनके एक अनुभव को पढ़कर मन अभिभूत हो गया। उन्होंने लिखा है – यह आमतौर पर कैपेरस, सेलमेलिया, ऐरीथ्रिनिया, बेसिका आदि के पराग लेती हैं। कभी-कभी इसके सिर पर परागकण चिपक जाते हैं। ऐसे में इसके सिर पर लगे लाल टिक्के देखने वालों को अचम्भित करते हैं। और इसे एक नया रंग-रूप भी देते हैं।